चितवनः मूल मिलावे की शोभा

"पूज्य सरकार श्री के विचारों का संकलन"

पारब्रह्म धनी अक्षरातीत श्री राजजी के इश्क एंव साहेबी (एश्वर्य)की अनुभूति करने हेतु आत्माएँ इस माया जगत रुपी खेल में अवतरित हुयी हैं। वे 'जीव' रुपी मालिक के शरीर रुपी घर में मेहमान बन कर रह रही हैं यह 'आत्मा' हमारे मूल स्वरुप, जिसे 'परआतम' कहते हैं, उसकी 'नज़र' मात्र है अपने मूलतः द्वष्टा स्वभाव को भूली हुई आत्माओं को जागृत करने हेतू धनी ब्रह्मवाणी-बेशक इलम लायें हैं जिससे आत्म अपने निजधाम की निस्बत के प्रति जागृत हो कर पुनः अपने निज-स्वरुप में खड़े होने को तड़प उठती है और अपने मूल मिलावे को, जहाँ से सुरता बिछड़ी है को पल-पल याद करती है। यहाँ बैठ कर ही चिद्घन स्वरुप श्री राजजी अपनी आनंद स्वरुपा श्री श्यामजी एवं हम आत्माओं को सत अंग अक्षर ब्रह्म रचित माया का खेल अपने चरणों में बिठा कर दिखा रहे हैं। इस मूल मिलावे की शोभा का चितवन ही हम आत्माओं की खुराक है। यही हमारा वास्तविक जीवन है। जैसे श्री मुखवाणी में इन्द्रावती जी कह रही है:

इन विध साथजी जागिये, बताए देऊँ रे जीवन।
श्याम श्यामाजी साथजी, जित बैठे चौक वतन।।

पन्नाजी में श्री जी के जीवन काल दरम्यान नियमित चितवन हुआ करता था। आज हम सुदंरसाथ के चितवन का आधार श्री कुलजम स्वरुप, श्री मूल बीतक साहब एंव वृत साहित्य है जिस पर 'महामति' की छाप है। इन ग्रंथों में दर्शायी गयी शोभा हम चितवन में हमारे हृदय में बसाने का प्रयास करते हैं।

लेकिन हमारी कुछ परंपरागत मान्यताऐं हमारे चितवन में बाधा रुप बन बैठती हैं। पूज्य सरकार श्री ने अपना सम्पूर्ण जीवन हमें इन उल्झनों से निकालने में लगा दिया। उनके द्वारा स्पष्ट किये गये श्री मुखवाणी के रहस्यों में से मूल मिलावे की शोभा का स्पष्टीकरण प्रमुख है जो श्री कुलजम स्वरुप की कसौटी में सही सिद्ध होता है। सुन्दरसाथ जी वैसे तो मूल मिलावे की शोभा एवं चितवन के बहुत सारे पहलू (DIMENSIONS) हैं। इनमें से सिंघासन की स्थिति एंव सखियों की बैठक इन दो महत्वपूर्ण बातों पर आज विचार करेंगे। आओ चलें पूज्य सरकारश्री के शब्दों से ही उसे समझें फिर विविध प्रश्नों की चर्चा करें ।

सन् १९९८ की श्री निजानंद आश्रम बड़ौदा में हुई शिविर में पूज्य सरकारश्री ने कहा- "प्यारे सुन्दरसाथ जी! मूल मिलावे की बात आ गयी, जो आप सब के सामने कहना चाहता हूँ। ठीक है, जैसे भी नक्शे या चित्र आज दिन तक हमारे पास आये हैं बेशक श्री मुखवाणी के

Nijanand App

हिसाब से बिलकुल गलत हैं।" आप स्वामी जी (श्री जी) ने अपने मुखारविंद से महामति नाम से वाणी कही है। महामति किसी व्यक्ति का नाम नहीं है। 'महामति श्री राजजी महाराज की पांचो शक्तियों को कहा है। धनीजी का जोश, आतम दुल्हन श्यामाजी, नूर, हुकम, बुध, मूल वतन-ए पांचों मिल भई श्री महामति अब महामति की छाप से ही स्वरुप साहब है, महामति की छाप से, ही श्री बीसक साहब है, और महामति की छाप से ही बड़ीवृत भी है। "इल्मियों ने उस बीतक को भी और उस वृत को भी अपभ्रंश किया। उन्होने सिंघासन को चबूतरे के मध्य में बताया फिर क्या बताया कि सखियाँ चारों तरफ घेर कर बैठी हैं। भाई, मेरी आत्मा ने माना नहीं। कई बार रमेश भाई जी से भी बातें होती हैं और जो खास-खास सुन्दरसाथ जी हैं उनसे जबसे विंध्याचलजी महाराज से हमारा मिलन हुआ है, मैने उनसे कहा, विंध्याचलजी महाराज ये कैसे होगा, मेरी आत्मा इस को कभी भी स्वीकार नहीं करेगी कि श्री युगल स्वरूप मध्य में बैठे हैं, और सखियाँ उनके पीछे आकर भी-बैठी हुई हैं पूज्य सरकार श्री १९९५ में चितवन शिविर में हम सुन्दरसाथ को चितवन विधी एवं मूल मिलावा शोभा दर्शा रहे थे वहाँ उन्होने कहाः 'सुन्दरसाथजी' देखिये! यह पांचवी गोल हवेली, जो हमारा मूल मिलावा है, उसके चारों ओर चौंसठ थंभ हैं और कठेड़ा आया है, चार दरवाजे चार दिशा में है, अब चबूतरे पर चढ़ कर देखो। यह जो सिंघासन केन्द्र में है, इसको उठा कर पहले तो पश्चिम के दरवाजे से लगते दाहिनी तरफ के पाँच और नीलवी के थंभों के आगे रख लो, यह चित्र पुराना है। यह ठीक नहीं है। क्योंकि वाणी में कहीं नहीं मिलता है कि सखियाँ श्री राज जी महाराज को घेर कर सिंघासन की चारों और बैठी हैं। हाँ, यह अवश्य स्पष्ट लिखा है कि श्री राज जी महाराज सबको अपनी नज़र मे लेकर बैठे हुए हैं। यह कोई सोचता ही नहीं है।"

"लोग सोचे समझे बिना ही कह देते हैं हांजी ..... रतनपुरी वालों ने और जागनी अभियान वालों ने अब तारतम के साथ, मूलमिलावे में सिंघासन का स्थान भी बदल दिया है। ना ..... बाबा ..... ना, हमें गुनेहगार मत बनाओ। ..... हम तब ऐसी नयी बात बोले हैं, जब हमें यथार्थ प्रमाण मिल गया है। मेरी आत्मा नहीं मान रही थी ..... तीस (३०) साल से, कि ये मूलमिलावे के नकशे बिलकुल गलत बनाये गये हैं। ..... फिर क्या बनाया गया ..... कि सखियाँ तीन हारों में बैठी हैं। राजसी, स्वांतसी और तामसी-यह बिलकुल बकवास है। परमधाम में तत्व सब का एक नूरी हैं। तो फिर राजसी, स्वांतसी, तामसी कहां से आ गयी? सुन्दरसाथ जी! एक-एक चीज को दिमाग में बिठाओ।"

वाणी में श्री राज जी कहते हैः यू मिल बैठियाँ, देख के हक हसें हम पर। देख खेल में, भेलियां रहें क्यों कर, और हाँ! जो यदि यहाँ (केन्द्र में) सिंघासन है तो श्री राज जी और श्यामाजी के पीछे कौन जा कर बैठेगा? सोचो ज़रा अपनी बुद्धि से, और फिर द्वढ़ता लाया

Nijanand App

करो। ये नही कि किसी ने कुछ कह दिया तो हम उस पर बिना सोचे ही द्रढ़ता ले कर आये। नहीं यहां (पश्चिम के दरवाजे के पास) आयेगा सिंघासन, और यहाँ (श्री राजजी के सम्मुख) सब सखियाँ भर कर बैठी हैं। तो बोलिये सब श्री राजजी महाराज की नज़र में हैं कि नहीं? और सबकी नज़र में श्री राज जी महाराज हैं कि नहीं, ये बात है बस! और यहाँ (केन्द्र सेंटर में) सिंघासन रख देते हैं तो फिर मैं कहूंगा कि तूं पीछे चली जा, मैं तो यहाँ सिंघासन के सम्मुख ही बैठती हूँ। कौन नहीं चाहता कि वो अपने धनी के सम्मुख हो कर बैठे?

तो ..... ये है:- देखिये इस मूल मिलावे के नये चित्र को। अब बाकयादा सब चौपाईयाँ सुनिये, प्रमाण लीजिये। ये मिली कहाँ से हैं, जो "बड़ी वृत" स्वामी जी ने खुद श्री लालदास जी के तन में विराजमान हो कर कही है, उसमें यह लिखा हुआ है। "ये चौपाईयाँ उसमें से, ध्यान से सुनिये:

इन दुलीच पर शोभित, कंचन रंग सिंघासन।
पाच नीलवी के लगते, झलकत नूर रोशन।।
द्वार पैठते सामने, शोभित दाहिने हाथ।
हक हादी बैठे तखत, लग अंग-अंग के साथ।। *बड़ी वृत:१५/८३/-८४*

देखिये, ये जो दरी हम बिछाते हैं, जिसके उपर सिंघासन है उसे परमधाम की वाणी में 'दुलीचा' कहते हैं और ये हैं पांच और नीलवी (पश्चिम द्वार की ओर दर्शाते हुए)-ये थंभो के नाम है। उनको लगता हुआ यहाँ पर सिंघासन है, जो कंचन रंग का चमक रहा है, झलक रहा है। श्री राज जी महाराज तखत पर बैठें हैं, और सखियाँ अंगो अंग लगा कर बैठी है फिर वाणी में कहा है:

ए मेला बैठा होए के, रुहें एक दूजे को लाग।
आवे ना निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगूरी भाग।।

"अर्थात, सखियाँ इस तरह से चिपट के बैठी हैं कि बीच में अंगूलि भी नहीं जा सकती है। और यही बात बड़ी अरजी (सेवा पूजा) में भी है कि सखियाँ कैसे बैठी है कि "ज्यों दाडिम की कलियाँ" दाड़िम कहते है अनार को। उसके दाने कभी दाडिम को काट कर देखें है? कैसे एक दूसरे कस कर ठसे होते है। इसी तरह रुहें ठस कर बैठी है तो ये सिंघासन यहाँ पर है। (पश्चिम में)।"

अगले अकों में हम इस विषय पर विशेष पुष्टि करने हेतु वृत एंव वाणी मंथन करेंगे। और फिर तीसरे भाग में हमारी उत्क्रास समझ के प्रतिकार में किये जाने वाले विविध प्रश्न जो हमारे विद्धवानगण एंव सुंदरसाथ करते आ रहे है, इन पर विचार करेंगे।

प्रणाम जी,

नरेन्द्र आर. पटेल न्यू जर्सी (अमेरिका)

Nijanand App